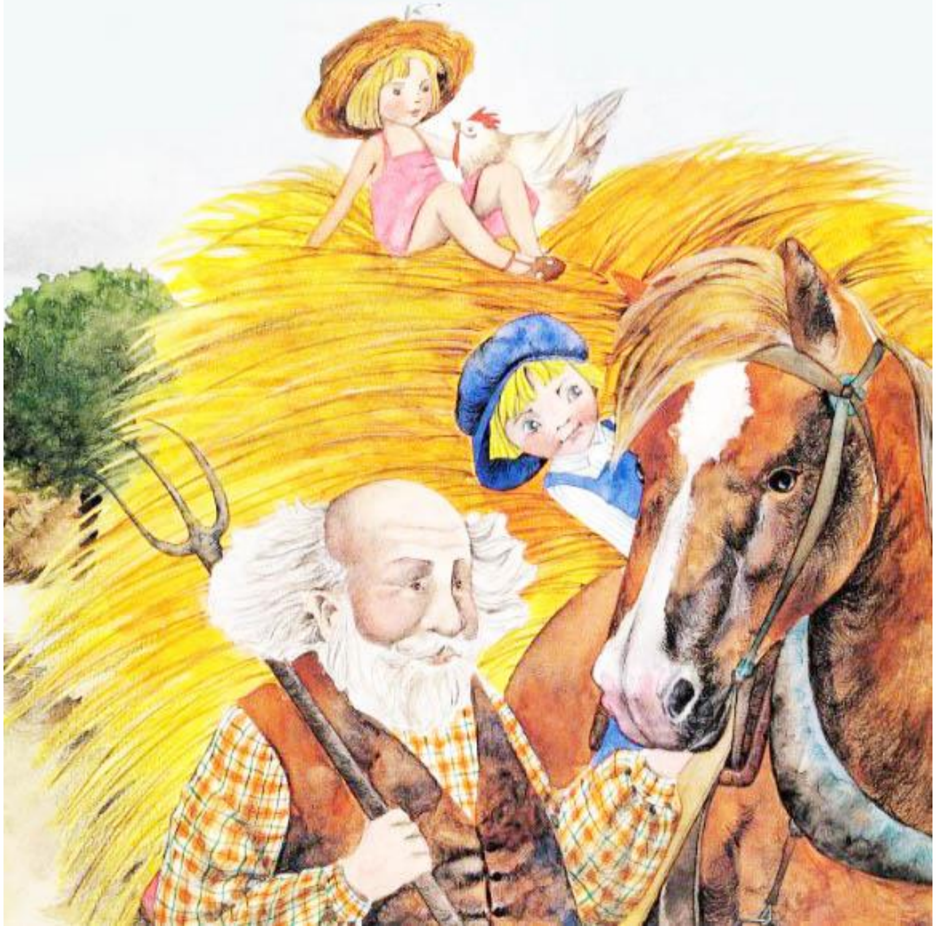
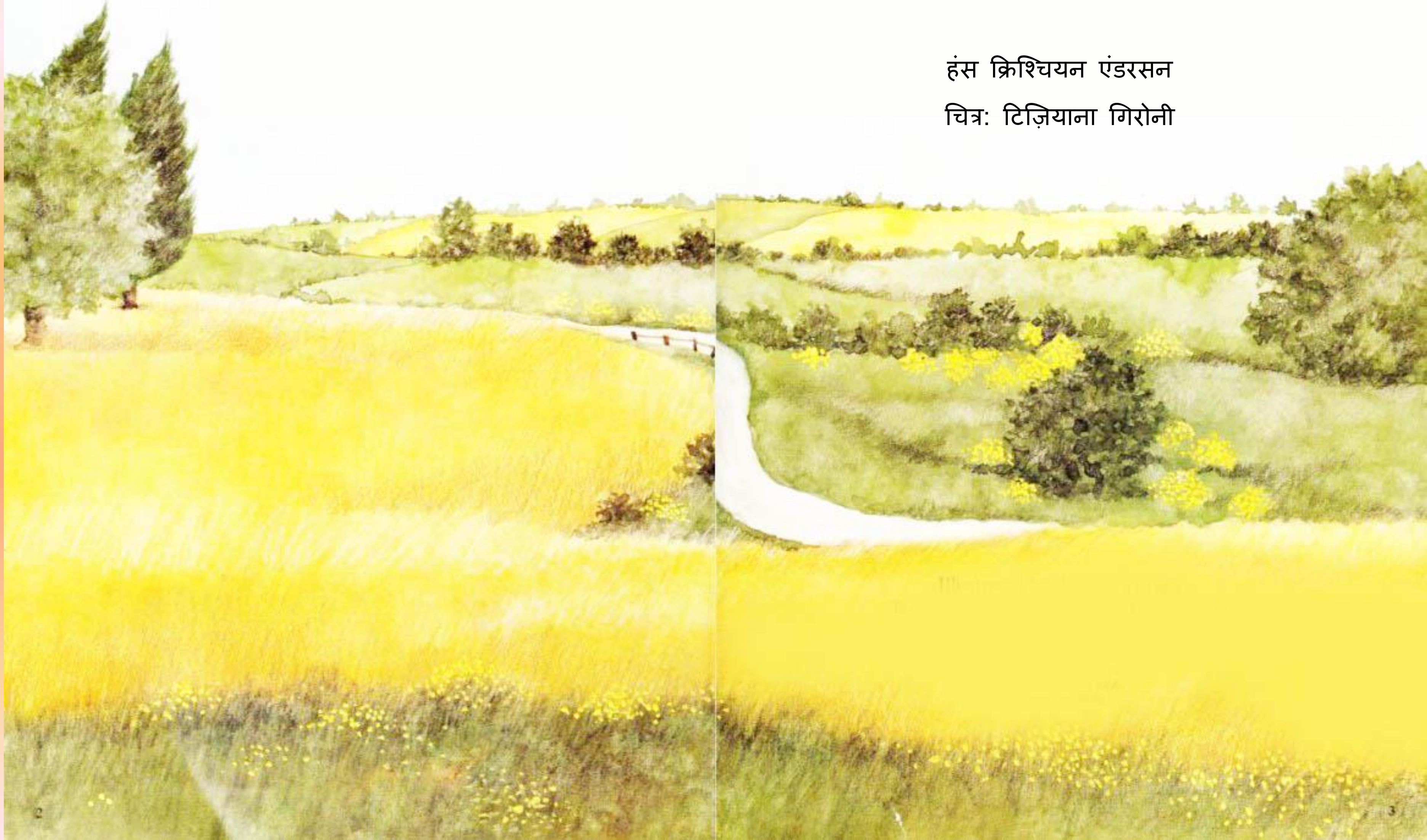
कुट्टू

हंस क्रिश्चियन एंडरसन
चित्र: टिज़ियाना गिरोनी



कुट्टू

हंस क्रिश्चियन एंडरसन
चित्र: टिज़ियाना गिरोनी



अक्सर, जब कोई तूफान के बाद कुट्टू के खेत से गुजरता है, तो वह देखता है कि वह बिल्कुल काला और जला हुआ दिखता है. ऐसा लगता है जैसे आग उसके ऊपर से गुज़री हो. तब किसान कहता है, "बिजली ने ऐसा किया." लेकिन ऐसा क्यों हुआ? मैं आपको बताऊंगा जो सिलेटी गौरैया ने मुझे उसके बारे में क्या बताया. और सिलेटी गौरैया ने उसे एक पुराने विलो यानि मजनू के पेड़ से सुना जो एक कुट्टू के खेत के पास ही खड़ा था, और वो आज भी वहीं खड़ा है.



वो एक बड़ा और प्रतिष्ठित मजनू का पेड़ है. वो लेकिन पुराना और झुर्रियों से भरा हुआ है, और अब वो बीच से फट गया है. अब उसकी दरार में घास और झाड़ियाँ उगती हैं. पेड़ एक तरफ झुक गया है और उसकी शाखाएँ ज़मीन पर लटक रही हैं, जैसे कि वे लंबे, हरे बालों की लटें हों.

पास के खेतों में मक्का, राई, जौ और जई उगते थे. हाँ, वहाँ सुंदर जई भी उगते थे, जिसके फूल एक पकी शाखा पर बहुत सारे छोटे पीले कैनरी पक्षियों की तरह दिखते थे. मकई बहुत फलदार थी, और उसके फल जितने ज़्यादा भारी होते थे, वह उतनी ही नीचे झुकती थी.



लेकिन फिर वहाँ एक कुट्टू का खेत भी था, और वो खेत पुराने मजनू के पेड़ के ठीक बगल में था. कुट्टू, मकई की तरह नीचे नहीं झुकता था. वो सीधा, गर्वित और अकड़ू गर्दन करके खड़ा रहता था.



"मैं बेहद अमीर हूँ," उसने कहा, "और उसके अलावा मैं बहुत सुंदर हूँ. मेरे फूल सेब के फूलों की तरह सुंदर हैं. हमें देखकर लोगों की आँखें प्रसन्न होती हैं. क्या आप हमारे जैसे सुंदर किसी पुराने मजनू के पेड़ को जानते हैं?"



और फिर मजनू के पेड़ ने अपना सिर हिलाया जैसे कि वो कह रहा हो, "हाँ, मैं जानता हूँ." लेकिन कुट्टू गर्व से इतना फूला हुआ था, उसने कहा, "मूर्ख बूढ़ा पेड़! वो इतना पुराना है कि उसके पेट में घास उग आई है."







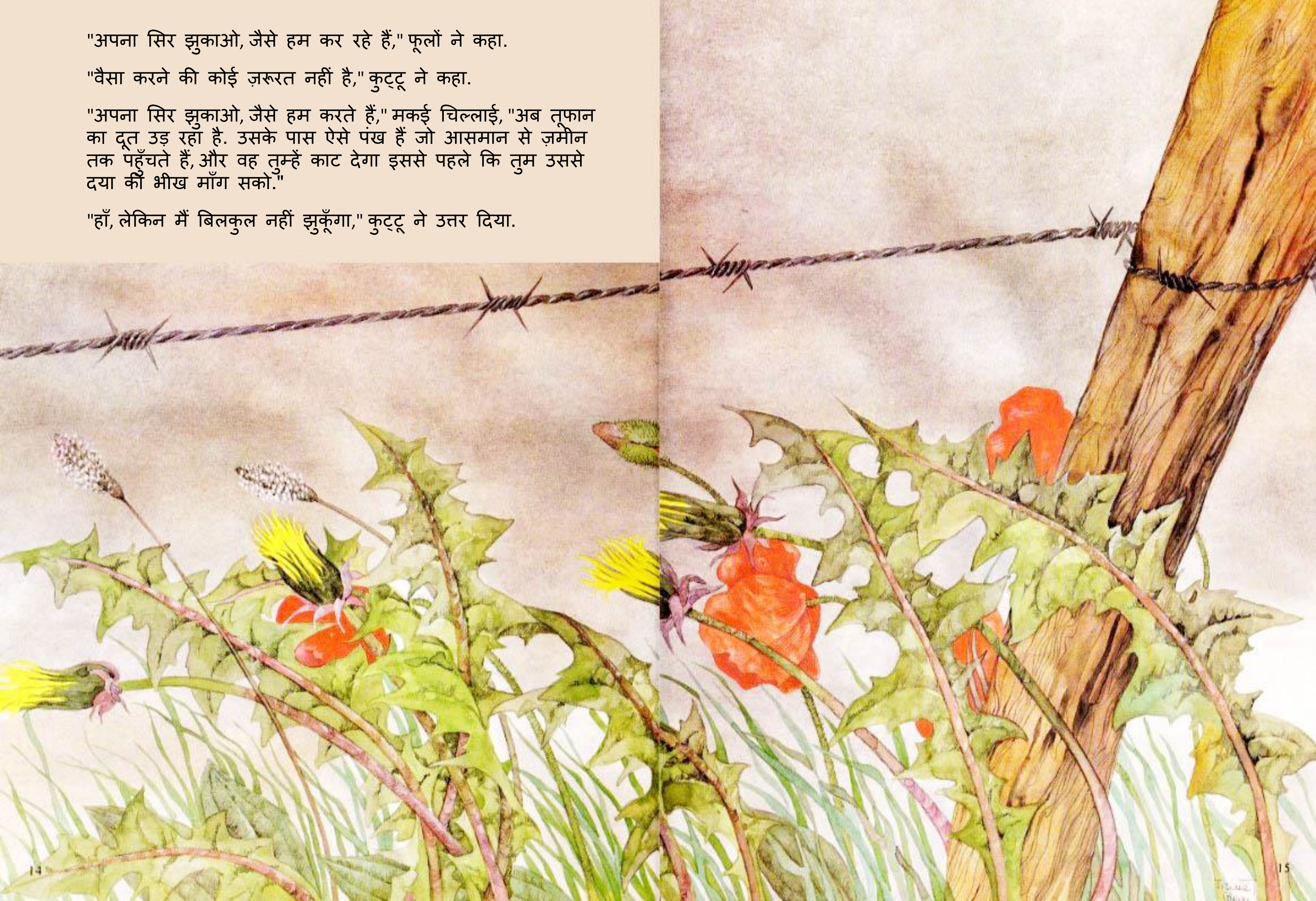
तभी एक भयंकर तूफान आ रहा था. तूफान के ऊपर से गुजरते समय खेत के सभी फूलों ने अपने मुकुट मोड़ लिए थे और अपने सुंदर सिर झुका लिए थे. लेकिन कुट्टू गर्व से अकड़ कर खड़ा रहा.

"अपना सिर झुकाओ, जैसे हम कर रहे हैं," फूलों ने कहा.

"वैसा करने की कोई ज़रूरत नहीं है," कुट्टू ने कहा.

"अपना सिर झुकाओ, जैसे हम करते हैं," मकई चिल्लाई, "अब तूफान का दूत उड़ रहा है. उसके पास ऐसे पंख हैं जो आसमान से ज़मीन तक पहुँचते हैं, और वह तुम्हें काट देगा इससे पहले कि तुम उससे दया की भीख माँग सको."

"हाँ, लेकिन मैं बिलकुल नहीं झुकूँगा," कुट्टू ने उत्तर दिया.



"अपने फूल बंद करो और अपने पत्ते झुकाओ," बूढ़े मजनू के पेड़ ने कहा. "जब आकाश खुले तो बिजली की ओर बिल्कुल मत देखना. यहाँ तक कि मनुष्य भी ऐसा करने की हिम्मत नहीं करते क्योंकि बादलों में कड़कती बिजली में वे परमेश्वर के स्वर्ग को देख सकते हैं. लेकिन वो दृश्य मनुष्यों को भी अंधा कर देता है. अगर हम ऐसा करने की हिम्मत करें तो धरती के हम तुच्छ प्राणियों का क्या होगा, हम बहुत ही हीन हैं."



"बहुत हीन?" कुट्टू ने कहा. "अब, मैं बस यही चाहता हूँ, भगवान के स्वर्ग में झाँकना." और ऐसा हुआ भी. अहंकार और गर्व में ऐसा लग रहा था मानो पूरी दुनिया में आग लग गई हो क्योंकि बहुत तेज बिजली चमक रही थी.







जब बुरा मौसम बीत गया, तो फूल और मकई शांत, स्वच्छ हवा में खड़े थे. वे बारिश से तरोताजा दिख रहे थे. लेकिन कुट्टू बिजली की वजह से कोयले की तरह काला-कुट्ट हो गया था, और अब वो खेत में एक मृत, बेकार खरपतवार बन चुका था.



और पुराने मजनू के पेड़ ने हवा में अपनी शाखाएँ हिलाईं, और तभी उसकी हरी पत्तियों से पानी की बड़ी-बड़ी बूँदें गिरीं, मानो पेड़ रो रहा हो.
गौरैयों ने पूछा, "तुम क्यों रो रहे हो, पुराने मजनू के पेड़?"

और मजनू के पेड़ ने उन्हें कुट्टू के गर्व, अहंकार और दंड के बारे में बताया. ऐसा हमेशा होता है.

मैं, जो कहानी सुना रहा हूँ, वो मैंने गौरैयों से सुनी थी. उन्होंने मुझे उस शाम यह कहानी सुनाई जब मैंने उनसे परियों की कहानी सुनाने को कहा था.